सिनेमा के सरोकार : एक अध्ययन

शशि रानी
डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
ssranidu@gmail.com

सार

सिनेमा मानवीय चेतना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। कला के विविध रूपों को अपने में समेटे सिनेमा ने समाज के रचनात्मक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज से नहीं अपितु अपने जन्म काल से ही सिनेमा लोगों में अपनी संस्कृति ज्ञान, जागरूकता आदि का प्रसार करता रहा है। सिनेमा समाज की समस्याओं, घट रही घटनाओं को आधार बनाकर अपनी कथा की रचना कर समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। कदापि इसीलिए सिनेमा को समाज का आईना कहा जाता है। यह एक ऐसा आईना है जिसमें समाज के विविध रूप और सामाजिक सरोकारों के विविध संदर्भ दृष्टिगत होते हैं। यही इसकी उपादेयता है। गुप्त जी ने कहा है," केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उपदेश का भी कुछ मर्म होना चाहिए।" कवि का यह कथन जितना साहित्य के संदर्भ में सही है उतना ही सिनेमा के संदर्भ में भी। कोरा उपदेश प्रभावहीन होता है और वही यदि रोचकता के साथ प्रस्तुत किया जाए तो वह न केवल सुना या देखा जाता है बल्कि अपना प्रभाव छोड़ने में भी सफल रहता है। व्यवसायिकता के इस दौर में दर्शक और निर्माता के उद्देश्य के बीच सामाजिक सरोकार को अभिव्यक्त करती फिल्म थ्री इडियट्स इस मायने में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

बीज शब्द: *सरोकार, शिक्षा प्रणाली, मौलिक प्रतिभा, अवसाद, उत्पीड़न, काबिलियत*

प्रस्तावना

सिनेमा में समकालीन समाज और समय बोलता है। सिनेमा का इतिहास इस बात का साक्षी है। प्रारंभिक फिल्मों की कथावस्तु तत्कालीन समय की सामाजिक मान्यताओं और रूढ़िवादी परंपराओं की बानगी प्रस्तुत करती हैं। चंडीदास, अमृत मंथन, अछूत कन्या, औरत, देवदास,आदमी, रतन, अंदाज आदि फिल्में सामाजिक विषयों पर आधारित हैं। युवा पीढ़ी को स्वाधीनता संघर्ष से अवगत कराने और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत करने के लिए पांचवें दशक में और उसके बाद भी आजादी की भाव भूमि पर फिल्मों का निर्माण किया गया। आनंद मठ ,सरफरोश, ग़दर : एक प्रेम कथा, लगान, लक्ष्य ,स्वदेश, द लीजेंड ऑफ भगत सिंह, मंगल पांडे: द राइजिंग, रंग दे बसंती आदि । आजादी के बाद समय के बदलते तेवरों को भी सिनेमा में देखा जा सकता है। जैसे गरीबी, शोषण, महंगाई, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, राजनीतिक दांवपेच, पारिवारिक विघटन और आतंकवाद । बादल, क्रांति ,मां तुझे सलाम, कर्मा माचिस ,सरफरोश ,मिशन कश्मीर मैं आतंकवाद और अर्धसत्य,इंकलाब ,शिवा ,तिरंगा आदि में राजनीतिक दांवपेच, मासूम, दीवार, जख्म, बागवान, अतिथि तुम कब आओगे में बदलते पारिवारिक परिवेश , साहब बीवी और गुलाम, भूमिका अंकुर, निकाह ,चांदनी बार, दमन में नारी शोषण और मांझी,पीपली लाइव भारतीय समाज की विसंगतियों और विरोधाभासों को उकेरती है। इसी प्रकार तारे जमीन पर एक संवेदनशील फिल्म है जो मानसिक रूप से पिछड़े बच्चे की व्यथा कथा को सामने लाती है। मानसिक रूप से विकलांगता पर भी फिराक, गुलाल और पा जैसी फिल्में बनी है। जो इसके कारण उत्पन्न हुई व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षणिक और सामाजिक समस्याओं को व्यक्त करती हैं।

सिनेमा समाज को शिक्षा और जागरूकता प्रदान करने वाला प्रभावी कलात्मक माध्यम है। फिल्मों में चित्रित परिवेश और समाज सामाजिक विसंगतियों और समस्याओं पर तो कुठाराघात करता ही है, इन विसंगतियों और समस्याओं को दूर करने के लिए अनुकूल मानसिकता का भी निर्माण करता है। इस दृष्टि से वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की खामियों को उजागर करती थ्री इडियट्स फिल्म अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक फिल्म है। इस फिल्म में तथाकथित विधिवत शिक्षा के बिना उल्लेखनीय अविष्कार करने वाले लोगों की गुमनामी की कथा भी व्यक्त की गई है। इन लोगों ने बहुत शिक्षित ना होते हुए भी अपनी मौलिक सूझबूझ के बल पर देसी स्तर पर बेमिसाल चीजें बनाकर जनहित में उनका शानदार उपयोग किया। हमारे समाज में जहांगीर पेंटर (महाराष्ट्र) मोहम्मद इदरीश (मेरठ, उत्तर प्रदेश) रेमया जोश (केरल) कुछ ऐसे ही नाम है। जिन्होंने यह सिद्ध किया है कि किसी भी वैज्ञानिक क्षमता के लिए विश्वविद्यालय की डिग्री जरूरी नहीं है अपितु वह जन्मजात,सूझ बूझ और परिश्रम से भी

प्राप्त की जा सकती है। देश में अनेक ऐसी प्रतिभाएं हैं जिन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा के आधार पर महत्वपूर्ण आविष्कार कर दुनिया में पहचान बनायी। यह फिल्म मौलिक प्रतिभा के विकास की सार्थकता को रेखांकित करते हुए बड़ी-बड़ी डिग्रियों की निरर्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगाती है।

थ्री इडियट्स 25 दिसंबर 2009 को प्रदर्शित हुई। प्रोड्यूसर विधु विनोद चोपड़ा और निर्देशक राजकुमार हिरानी की यह फिल्म चेतन भगत के उपन्यास फाइव प्वाइंट समवन पर आधारित है। इस फिल्म में रणछोड़ दास फुनसुख वांगडू (आमिर खान) फरहान कुरेशी (आर माधवन), राजू रस्तोगी (शरमन जोशी) ने मुख्य भूमिकाएं निभाई हैं। रणछोड़ दास फुनसुख वांगडू(रांचो),फरहान कुरेशी और राजू रस्तोगी तीनों इंजीनियरिंग के छात्र है। इस फिल्म में फरहान के माध्यम से बच्चों के कैरियर को लेकर माता- पिता की मानसिकता और छात्रों की विवशता को दर्शाया गया है। फरहान वाइल्डलाइफ फोटोग्राफर बनना चाहता है लेकिन उसके पैदा होने के बाद ही उसके पिता ने तय कर दिया कि उसे इंजीनियर बनना है ।

"जन्म के समय अब्बा ने कहा था मेरा बेटा बड़ा होकर इंजीनियर बनेगा साला मुझे किसी ने पूछा भी नहीं।"

अनचाही इंजीनियरिंग की पढ़ाई से वह अंदर-ही अंदर घुटन महसूस करता है। राजू एक अभावग्रस्त परिवार से हैं। वह अपने परिवार को पढ़ाई करके एक सुदृढ़ आर्थिक आधार देना चाहता है । आत्मविश्वास से रहित राजू को भविष्य का डर सताता रहता है और विज्ञान का छात्र होने के बावजूद वह अंधविश्वास से घिरा रहता है। उसके मन पर असफल होने के डर की छाया इतनी गहरी है कि वह पूजा पाठ करता नजर आता है लेकिन फिल्म जीवन के सत्य को उद्घाटित करती हुई दर्शाती है कि सफलता के लिए आत्मविश्वास , कर्म एवं लगन अत्यंत आवश्यक है। फिल्म का मुख्य पात्र रणछोड़ दास छाचंड जो असलियत में फुनसुख वांगडू नाम का एक गरीब परिवार का प्रतिभावान लड़का है, हमेशा अच्छे अंकों के साथ पास हो जाता है।

फिल्म का मुख्य किरदार असली रणछोड़ दास पढ़ाई में फिसड्डी था इसलिए वह बचपन से ही अपने नौकर के बेटे यानी फुनसुख (छोटे) को अपनी जगह परीक्षा दिलाता और अव्वल रहता है । रणछोड़ के पिता एक अनपढ़ व्यक्ति थे और अपने बेटे को पढ़ा लिखा कर इस कलंक से मुक्ति पाना चाहते थे इसलिए वह अपने बेटे के स्थान पर फुनसुख को रणछोड़ के नाम से इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए दिल्ली भेजते हैं और इस तरह अपने बेटे के लिए इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल कर लेते हैं। यह घटना अपने नालायक बच्चों के लिए अमीर मां-बाप की डिग्री बटोरने की लालसा, झूठे स्टेटस को बनाए रखने की उत्कंठा और गरीबों का शोषण करने की प्रवृत्ति को बखूबी उजागर करती है। समाज के धनाढ्य लोगों का यह प्रपंच पढ़ाई के असली हकदारों को शिक्षा से वंचित कर देता है। इस फिल्म में गरीब बच्चा फुनसुख पढ़ तो लेता है पर वह डिग्री उसके नाम पर नहीं है। वह अपने जीवन में उसका उपयोग नहीं कर सकता । फिल्म मैं तो डिग्री का मालिक मौलिक प्रतिभा से संपन्न है पर समाज में ऐसे अनेक किस्से मिल जाएंगे जहां ऐसे लोग बिल्कुल फिसड्डी होते हैं लेकिन नकली डिग्री का फायदा उठाते हैं। यह फिल्म प्रकारांतर से ऐसे लोगों पर भी व्यंग्य करती है।

असली रणछोड़ दास (रांचो) किताबी ज्ञान ,ग्रेड मार्क्स में विश्वास नहीं करता आसान शब्दों में कही बातें उसे पसंद है । उसका मानना है कि जिंदगी में वही करो जो तुम्हारा दिल कहे। वह कहता है –

"सभी रेस में पड़ गए, ऐसा पढ़ाई से क्या फायदा इसे नॉलेज नहीं बल्कि प्रेशर बढ़ेगा"।

"सक्सेस के पीछे मत भागो एक्सलंस का पीछा करो,सक्सेस झकमार के तुम्हारे पीछे आएगा"।

वह अपने दोस्तों को कामयाबी और काबिलियत में फर्क समझाता है। उसकी नजर में पढ़ाई कामयाब बनने के लिए काबिल बनने के लिए जरूरी है।

फिल्म में शिक्षा व्यवस्था और समाज की अनेक समस्याओं को उजागर किया गया है। रांचो शिक्षा व्यवस्था से जुड़ी खामियों को सामने लाता है। अगर कोई छात्र आसान भाषा में समझाना चाहता है तो उसे वरीयता नहीं दी जाती वह सिर्फ किताबी भाषा ही समझाते हैं। ऐसी व्यवस्था ने मनुष्य के जीवन को मशीन बना दिया है जिससे मशीन ही पैदा होंगे अच्छे इंसान नहीं। आज की शिक्षा किताबों पर आश्रित हो गई है। हर बच्चा किताब की दौड़ में फर्स्ट आना चाहता है इस फिल्म में शिक्षा के विभिन्न संदर्भों को प्रस्तुत किया गया है। ग्रेड सिस्टम के संदर्भ में राचो कहता है," सर ग्रेड सिस्टम से प्रॉब्लम है ए ग्रेडवाला बादशाह सी ग्रेड वाला गुलाम।"

शिक्षा में प्रतियोगिता ने माहौल को तनावग्रस्त बना दिया है हर एक के मन में डर लगा रहता है कि यदि दौड़े नहीं तो छूट जाएंगे। शुरू में ही वायरस विद्यार्थियों से कहता है "लाइफ एक बॉर्डर लाइन है जो पहुंचा वह जीता वरना हार"। संस्थान का प्रमुख वीरू सहस्त्रबुद्धे को ही छात्र वायरस कहते हैं। प्रोफेसर सहस्त्रबुद्धे संवेदन शून्य शिक्षकों का प्रतीक है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का छात्र के

मनोमस्तिष्क पर दवाब और शिक्षक की संवेदन शून्यता के परिणाम स्वरूप छात्र आत्महत्या करते हैं।जॉय लोबो नामक छात्र समय पर प्रोजेक्ट पूरा ना होने के कारण आत्महत्या करता है। राजू भी मानसिक तनाव के कारण ऊपर से कूद पड़ता है और उसके पैरों में गंभीर चोट आ जाती है। प्रोफेसर के उत्पीड़न के कारण इंजीनियरिंग और साइंस के छात्रों में इस तरह की घटनाएं अधिक मिलती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार 2014 में 8,068, 2015 में 8934 छात्रों ने आत्महत्या की। छात्रों की आत्महत्या का दिन प्रतिदिन बढ़ता गया आंकड़ा चिंता का विषय है।आत्महत्या का मुख्य कारण परीक्षा में नाकामी है।। विशेषज्ञ मानते हैं कि इन उम्मीदों का भारी दबाव छात्रों के लिए एक समस्या बनकर उभरा है इसके साथ ही शिक्षण संस्थानों के हालात भी बहुत हद तक आत्महत्या के लिए जिम्मेदार हैं।

वर्तमान शिक्षा छात्र के सर्वांगीण विकास को महत्व नहीं देती। इसी कारण चतुर रामालिंगम जैसे छात्र आत्म केंद्रित हो जाते हैं। जो खुद तो 18 घंटे पढ़ते हैं लेकिन सक्सेस प्राप्त करने की होड़ में दूसरे छात्रों को दिग्भ्रमित करने के लिए लैंगिक प्रेरणा देने वाली बाजारू किताबें उनके कमरे में रख कर उन्हें मानसिक रूप से परेशान करते हैं। शिक्षा में पक्षपात की प्रवृत्ति की झलक भी यहां पर दिखाई गई है चतुर रामलिंगम यानी साइलेंसर वायरस का छात्र है जिसे टॉप कराने के लिए वह जुगत करता है। दूसरी ओर रांचो और फरहान राजू को रैंक दिलाने के लिए प्रश्न पत्र चुराने की कोशिश करते हैं। शिक्षा मनुष्य की समझ को विकसित कर निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। लेकिन रांचो का यह कथन 'शिक्षा व्यवस्था सुहास जैसे गधे तैयार करती है', शिक्षा प्राप्त कर लेने पर भी निर्णय न ले पाने के कारण युवाओं में बढ़ती दिशाहीनता को इंगित करती है। प्रिया का मंगेतर सुहास इंजीनियर की पढ़ाई के बाद एमबीए और उसके बाद बैंक में नौकरी करता है।

थ्री इडियट्स फिल्म हास्य व्यंग्य के माध्यम से वर्तमान शिक्षा पद्धति पर करारी चोट कर शिक्षा प्रणाली में सुधार कर व्यवहारिक शिक्षा पद्धति के प्रति एक सकारात्मक माहौल तैयार करने में मदद करती है। फिल्म के अंत में फरहान और राजू का रांचो की खोज में उसके घर पहुंचना और उन्हें यह पता लगना कि वह सुदूर स्कूल में काम करके लोगों के भीतर मौलिक और मानवीय वैज्ञानिक प्रतिभा के विकास का काम कर रहा है, प्रिया की बहन की डिलीवरी आदि प्रसंग शिक्षा को प्रायोगिक, आडम्बरहीन एवं अनौपचारिक बनाकर आम आदमी के लिए उपयोगी बनाने की जरूरत पर बल देते हैं। समाज में जब इनके काम को पहचान और प्रतिष्ठा मिलेगी तभी ऑल इज वेल होगा।

निष्कर्षत

थ्री इडियट्स शैक्षिक सरोकार पर आधारित बॉलीवुड की एक मौलिक फिल्म है ।यह फिल्म बड़ी सहजता से अपने संदेश को संप्रेषित करने में सफल रही है। इसमें गंभीर उद्देश्य को हास्य व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत कर विषय की विडंबना को दर्शाया गया। कॉलेज के परिवेश, वहां की अंदरूनी उठापटक और छात्रों की आर्थिक , सामाजिक, मानसिक स्थिति के द्वारा फिल्म में शिक्षा प्रणाली और शिक्षा जगत की विसंगतियों को बेबाकी से प्रस्तुत किया गया है। कॉलेज में पनपती रैगिंग समस्या, प्रश्न पत्रों की चोरी, डिग्री की खरीद-फरोख्त, किताबी कीड़ा बनाने की प्रवृति, अभिभावकों की अपनी इच्छा थोपने की प्रवृत्ति, दिशाहीन शिक्षा प्रणाली और अंततः तनावग्रस्त , आत्मविश्वास रहित निर्मित होते मशीनी मनुष्य आदि सभी विषय इसमें सम्मिलित हैं। प्रासंगिक और समसामयिक सरोकारों की नई सोच, नई दृष्टि की प्रस्तुति ही सिनेमा को प्रतिष्ठा और पहचान देती है।

संदर्भ

1. पुरुषोत्तम कुंदे , साहित्य और सिनेमा
2. नीरज दुबे , भारतीय फिल्मी और समाज
3. जवरीमल पारिख , भारतीय सिनेमा के सौ साल
4. विजय अग्रवाल, सिनेमा और समाज
5. जवरीमल पारिख , लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ
6. अनुपम ओझा, भारतीय सिने-सिद्धांत
7. डॉ कृष्ण कुमार रतू , सूचना तंत्र और प्रसारण माध्यम
8. फिल्म 'थ्री इडियट्स'